इंडिया @ 75

सी.के. प्रहलाद
पॉल एंड रूध मैकक्रैनकेन डिस्टिंग्यिूड यूनीवर्सिटी प्रोफेसर,
रॉस स्कूल ऑफ बिजनेस
द यूनिवर्सिटी ऑफ मिचिगन

23 सितंबर, 2007 को न्यूयॉर्क में इंडिया@60
समारोह के दौरान दिया गया व्याख्यान

इंडिया @ 75

सी.के. प्रहलाद
पॉल एंड रूध मैकक्रैनकेन डिस्टिंग्यिूड यूनीवर्सिटी प्रोफेसर,
रॉस स्कूल ऑफ बिजनेस
द यूनिवर्सिटी ऑफ मिचिगन

बहुत बहुत धन्यवाद तरूण। जी हां, इंडिया@60 – हमने बहुत उपलब्धियां हासिल की हैं और हमें इसका जश्न मनाना है। मैं जानता हूं कि हम यहां न्यूयॉर्क में एक मौज–मस्ती भरा सप्ताह बिताएंगे। मेरा सुझाव है कि हम जश्न मनाते हुए अपने आप से यह भी पूछेंः इसके बाद क्या? इंडिया@60 का जश्न मनाते हुए हमें यह याद रखना चाहिए कि हमारी सारी उपलब्धियां भूतकाल की हैं। जबकि, नेतृत्व का संबंध भविष्य से होता है और परिवर्तन से होता है। नेतृत्व का संबंध आशा से होता है। इसलिए, मैंने पिछले 60 वर्षों में न ही टिके रहने बलिक भविष्य पर ध्यान केंद्रित करने का निर्णय लिया है। मैं इंडिया@*75* पर केंद्रित करूंगा, इंडिया@60 पर नहीं। मेरा ध्यान इस बात पर होगा कि हम पहले 60 वर्षों के दौरान अपनी सफलताओं के आधार पर अगले 15 वर्षों में क्या प्राप्त कर सकते हैं। और भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि इस अवधि के दौरान इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए क्या करना होगा?

मैं एक रोमांचक और न्यायपूर्ण इंडिया@75 का निर्माण करने के संबंध में एक व्यक्ति की आशाओं, एक व्यक्ति की चिंताओं और एक व्यक्ति के दृष्टिकोण को आपके साथ बाटूंगा। मैं इस बात के साथ प्रारंभ करना चाहूंगा कि इंडिया@75 क्या हो सकता है। जब तक हमें क्षमता का स्पष्ट ज्ञान नहीं होगा, एक कठिन यात्रा प्रारंभ करना बहुत ही कठिन बात होगी। मेरा मानना है कि भारत उभरती विश्व व्यवस्था को आकार दे सकता है और उसे सक्रिय रूप से ऐसा करना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि भारत पर्याप्त *आर्थिक क्षमता, प्रौद्योगिकीय तेजस्विता* और *नैतिक नेतृत्व* अर्जित करे। केवल आर्थिक क्षमता और प्रौद्योगिकीय परिपक्वता ही पर्याप्त नहीं है। हम जानते हैं कि सोवियत यूनियन और नाजी जर्मनी के पास आर्थिक और प्रौद्योगिकीय ताकत थी। वे विफल हो गए। नैतिकता नेतृत्व का एक अभिन्न भाग है। मैं, अपने भाग्य–निर्माण के लिए भारत के प्रयाण हेतु तीनों पहलुओं पर समान रूप से जोर दूंगा।

इंडिया@75 की क्षमताः

1. भारत अपनी जनसंख्या को एक विशिष्ट लाभ में बदल सकता है। भारत में 200 मिलियन कॉलेज स्नातक व्यक्तियों का एक आधार – प्रत्येक विषय में शिक्षित लोगों का एक समूह बनाने की क्षमता है। यह भारत की जनसंख्या का मात्र 16 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त, मैं 500 मिलियन प्रमाणित और कुशल तकनीशियनों को भी देखना चाहूंगा। इस भविष्य में सार्वभौमिक साक्षरता की बात अंतर्निहित है। यदि नेतागण प्राथमिकता के रूप में इस लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करें, तो यह पंद्रह वर्षों में संभव है।[i] सोचिए, इसका क्या अर्थ है। भारत के पास *विश्व में कहीं भी मौजूद तकनीकी रूप से प्रशिक्षित श्रम शक्ति का सबसे बड़ा संग्रह* होगा। वैश्विक नेतृत्व के लिए यही प्रारंभिक बिंदु होना चाहिए। यदि भारत अपने शैक्षिक अभियान में विफल हो जाता है तो भारत के लिए मेरे सपनों को सच नहीं किया जा सकता।
2. फॉर्चून 100 फर्मों में से कम से कम 30 फर्में भारत की होनी चाहिए। मैं जानता हूं कि यह एक बहुत महत्वकांक्षी लक्ष्य है, परंतु यह संभव है।
3. भारत वैश्विक व्यापार में 10 प्रतिशत हिस्सा रखता है। भारत यह कर सकता है। हमें अपनी मानसिकता बदलनी होगी। वास्तव में, 1997 के एशियाई संकट से जब भारत प्रभावित नहीं हुआ था, तब भारतीयों ने बहुत गर्व किया था। मैंने उस समय कहा था कि यह एक दुःखद स्थिति को दर्शाता है क्योंकि यदि भारत शेष विश्व के साथ जुड़ा होता तो इसे संकट का प्रभाव महसूस होता है। भारत को शेष विश्व के साथ अवश्य जुड़ना चाहिए जो दूसरों को प्रभावित करने और अधिक महत्वपूर्ण रूप से, दूसरों से सीखने का आधार बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।
4. भारत वैश्विक नवीकरणों – नए व्यापारों, नई प्रौद्योगिकियों और नए व्यापार मॉडलों का स्रोत बन सकता है। प्रांरभिक साक्ष्य पहले से ही मौजूद हैं। भारत अधिकाधिक नए व्यापार मॉडलों बहुत निम्न पूंजी घनत्व, अत्यधिक निम्न नियत लागतों, और नियत लागतों के अनियत लागतों में बदलाव (जैसा कि एयरटेल के मामले में है) के लिए उद्‌भव स्थान बनता जा रहा है। इस पिरामिड के आधार, 800 मिलियन भारतीय परिवर्तनकारी नवीकरणों के मुख्य स्रोत बन सकते हैं[ii]।
5. भारत को कलाओं, विज्ञान और साहित्य के विकास पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। भारत में दस नोबल पुरस्कार विजेता क्यों नहीं हो सकते? मैं यह भी कहना चाहता हूं कि यह बेहतर होगा कि यह पुरस्कार भारत में किए गए कार्य के लिए मिले – न कि केवल कहीं अन्यत्र किए गए कार्य के लिए भारतीय नोबल पुरस्कार प्राप्त करें।
6. भारत विविधता को कैसे संभाला जाए, इस संबंध में विश्व के लिए मानदंड बन सकता है। यह सार्वभौमिकता और समावेशन की परंपरा के लिए मानदंड बन सकता है। भारत में इसके लिए

अवसर मौजूद हैं क्योंकि यह सभी प्रमुख धर्मों 15 प्रमुख भाषाओं और सैंकड़ों बोलियों और संस्कृतियों, खानपान की आदतों ओर धर्मविधियों की जटिल श्रृंखला जैसी लगभग सभी विविधताओं का, जिनकी कोई आशा कर सकता है, का स्थान है। यदि भारत विविधता और समावेशन का अभ्याय करने के लिए प्रयोगशाला नहीं है, तो कोई अन्य स्थान भी नहीं है। *भारत विश्व की प्रयोगशाला है।*

इन्हें सूची में जोड़ा जा सकता है। मैंने जिन छः बड़े अवसरों की पहचान की है, यदि उन्हें साकार कर दिया जाए, तो वे विश्व में भारत के प्रभाव का बदल देंगे। भारत में क्षमता है। यदि यह क्षमता आपमें कुतुहल उत्पन्न करती है, तो हम अगले रोचक प्रश्न पर जा सकते हैंः हम वहां तक कैसे पहुंचंगे? हमें किस सिद्धांतों के साथ आरंभ करना चाहिए?

मूल सिद्धांत

मैं तीन सिद्धांतों को सुझाना चाहता हूं। प्रथम *उद्यम संबंधी परिवर्तन* के सारतत्व से संबंधित है। मैं जानता हूं कि बहुत लोग कहेंगे कि ''इंडिया@ 75'' की क्षमता को साकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि हमारे पास संसाधन नहीं हैं। मुझे याद है कि सात वर्ष पहले मैंने 10 प्रतिशत वृद्धि के लक्ष्य का सुझाव दिया था। भारत में कुछ बहुत वरिष्ठ और अत्यधिक ज्ञानी नौकरशाहों सहित अनेक लोगों ने कहा कि हमारे पास 10 प्रतिशत वृद्धि के लिए संसाधन नहीं है। संसाधन मुद्दा नहीं है बल्कि आकांक्षाओं और संसाधनों के बीच संतुलन मुद्दा है। इस कमरे में मौजूद प्रत्येक उद्यमी जानता है कि आकांक्षाओं और संसाधनों बीच सचेतन बेमेल से ही अभिनव परिवर्तन – और उद्यम संबंधी ऊर्जा उत्पन्न होती है। एक देश के रूप में, भारत को उच्च और आम सहमति वाली आकांक्षाएं रखनी चाहिए। एक देश के रूप में भारत में एक आम सहमति वाली आकांक्षा पिछली बार 1929 में उत्पन्न हुई थी जब तत्कालीन कांग्रेस पार्टी के नेताओं ने *'पूर्ण स्वराज'* की अपनी महत्वाकांक्षा की घोषण की थी। इसके बाद से, भारत में कभी कोई ऐसी राष्ट्रीय आकांक्षा नहीं रही जिस पर प्रत्येक भारतीय की आम सहमति हो। एक आम सहमति वाली आकांक्षा भारत को बदलने के लिए मूलभूत आवश्यकता है। उपलब्ध संसाधनों से अधिक बड़ी आकांक्षा को साकार करने के केवल दो तरीके हैं। एक तरीका संसाधनों से अत्यधिक लाभ उठाना है – प्रत्येक व्यक्ति के लिए और खर्च किए गए प्रत्येक रूपये से अधिक लाभ लेना। वैकल्पिक रूप से पूरी पद्धति को ही परिवर्तित किया जा सकता है, और इसे अपने हित में परिवर्तित किया जा सकता है। गांधी जी में यही प्रतिभा थी। उन्होंने अंग्रेजों के विरूद्ध पारंपरिक सशस्त्र संधर्ष को नहीं, बल्कि शांतिपूर्ण सत्याग्रह को अपनाया। दूसरा समान

रूप से महत्वपूर्ण सिद्धांत इस बात का समझाना है कि हम, पिछले 60 वर्षों में, अथवा पिछले 10 वर्षों में भी जो कुछ हमने किया, उससे निष्कर्ष निकालकर 'इंडिया@ 75' की क्षमता को नहीं समझ सकते। *आप यहां (वर्तमान स्थिति) से वहां ('इंडिया@ 75') का आंकलन नहीं कर सकते*। आपको 'इंडिया@ 75' की कल्पना करनी होगी, जिसका मैंने पहले उल्लेख किया, और तब उस भविष्य को ध्यानपूर्वक निर्माण करना होगा। भूतकाल के निष्कर्षों के साथ आगे बढ़ने की अपेक्षा भविष्य का निर्माण करना मूलभूत बात है। यही कारण है कि मैंने 'इंडिया@ 75' की क्षमता के उल्लेख के साथ अपनी बात प्रारंभ की। परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि हम एक चरण में यहां से वहां पहुंच जाएंगे। हमें छोट–छोटे कदम और स्पष्ट कदम उठाने होंगे, जो सही दिशा में उठाए जाएं। कुछ कदम प्रायोगिक हो सकते हैं। हम छोटे–छोटे कदमों के साथ आगे बढ़ें, परंतु अत्यावश्यकता की भावना और उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ें। तृतीयतः केवल सर्वोत्तम पद्धतियों पर ही ध्यान केंद्रित नहीं करें। यदि प्रत्येक व्यक्ति हर अन्य व्यक्ति को मानदंड बनाएगा, तो हम मामूलीपन की ओर झुकते जाएंगे। इसलिए मैं *अगली पद्धतियों* पर ध्यान केंद्रित करने का सुझाव देता हूं। इसका अर्थ है कि हमें कमजोर संकेतों को प्रवर्धित करना होगा, अवसर के एक नए पैटर्न को देखना होगा और उनका अनुसरण करने का साहस रखना होगा।

भारत में नव–यौवन का संचार करने की पद्धति के रूप में ये तीनों सिद्धांत सरल हैं परंतु शक्तिशाली हैं। हमें इनके साथ प्रारंभ करना चाहिए:

a. आकांक्षाएं > संसाधन
b. भविष्य का निर्माण
c. अगली पद्धतियों पर ध्यान

इन सिद्धांतों के अनुसार हमें 'यहां और अभी' दोनों के संबंध में और निश्चित रूप से भविष्य के संबंध में अलग तरीके से सोचने की आवश्यकता है। यह हमें एक विशिष्ट दृष्टिकोण विकसित करने के लिए बाध्य करता है। एक सहमतिपूर्ण दृष्टिकोण के बिना भारत के लिए एक दृढ़ और उत्साहपूर्ण भविष्य का निर्माण नहीं किया जा सकता। धीरे–धीरे वृद्धि करने से हम वहां नहीं पहुंच सकते । हमें केवल क्षणिक समाधान करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। सृजनात्मक, नवीकरण और उद्यमशीलता द्वारा समर्थित आकांक्षाओं के लिए एक सहमतिपूर्ण प्रतिबद्धता का सृजन करके विश्व का नेता बनने की दिशा में पहल की जानी चाहिए।

विकासात्मक संदर्भ

वह सामाजिक–राजनीतिक और अर्थिक संदर्भ क्या है जिसमें हमें इसे प्राप्त करना है? मेरा मानना है कि अगले 10–15 वर्षों के दौरान भारत में बहस के विषय में तेजी से परिवर्तन आएगा। मैंने ऐसे छः क्षेत्रों की पहचान की है जहां भारत के लिए अपनी क्षमता को साकार करने हेतु बहस की दिशा और इसका साधान महत्वपूर्ण होगा। विचार के क्षेत्र निम्नलिखित हैः

1. घोर–निर्धनता से आय की असमानता में अंतरण
2. आय के स्तरों से जीवन शैली मापन में अंतरण आकांक्षाओं की सार्वभौमिकता
3. कीमत–निष्पादन आवरण को बदलना
4. निम्न प्रौद्योगिकी–समाधान से उच्च प्रौद्योगिकी समाधानों की आम उपलब्ध्ता में अंतरण
5. पारिस्थितिकी सजीवता के लिए उत्पाद और कार्यों का प्रावधान करनाःा
6. सुशासन पर ध्यान

निश्चित रूप से, ये प्रश्न एक साथ मिलकर भारत जैसे विशाल, जटिल और अत्यधिक अनेकता वाले देश के आर्थिक विकास के लिए एक नए मॉडल का निर्माण करते हैं। विकास के इस मॉडल को सर्वाधिक अच्छी तरह से 'अगली पद्धति' के रूप में वर्णित किय जा सकता है क्योंकि इसे इतने बड़े पैमाने पर अब से पहले अन्यत्र कही भी प्रयोग नहीं किया गया है। इससे हमें मॉडलों (सर्वोत्तम पद्धतियों का मानदंड बनाने) के लिए बाहर की और नहीं बल्कि भारत के भीतर देखने और भारत की प्रतिभा का पूर्ण रूप से उपयोग करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए (जैसा हमने स्वतंत्रता आंदोलन में किया था)। हमें आर्थिक विकास की अगली पद्धति का अविष्कार करने की आवश्यकता है। मैं बहुत प्रवृतियों में से प्रत्येक की नीचे जांच करूंगा जो भारत के विकास के अगले चरण हेतु संदर्भ प्रदान करती है।

1. *घोर निर्धनता से आए असमानता में अंतरणः*

भारत में पिछले दशक के दौरान घोर निर्धनता में आश्चर्यजनक रूप से कमी आई है। यद्यपि भारत में अभी भी 380.6[iii] मिलियन लोग ऐसे हैं जो एक डॉलर प्रतिदिन से भी कम में अपना जीवन यापन करते हैं। यह मान लेना सुरक्षित होगा कि घोर निर्धनता में, जिसे एक डॉलर प्रतिदिन से कम में गुजारा करते हुए जीवन जीने के रूप में परिभाषित किया जाता है, अगले 15 वर्षों के दौरान और कमी आएगी। घोर निर्धनता ' इंडिया@ 75' में मुख्य्य चिंता का विषय नहीं हो सकती है। यद्यपि इसके स्थान पर एक अधिक

कठिन समस्या उभर कर सामने आएगी। त्वरित आर्थिक विकास और अर्थव्यवस्था के *वैश्विकरण का एक महत्वपूर्ण परिणाम इसके कारण उत्पन्न लाभों में पिछड़न और विषमताएं* होती हैं, समाज के कुछ वर्ग लाभ उठाएंगे (जैसे सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग में कार्य करने वाले) और कुछ (ग्रामिण भारत के निरक्षर मजदूर) पिछड़ जाएंगे। यह विषमताएं समाज में अनेक नए विभेदों–शिक्षित और अशिक्षित, शहरी और ग्रामीण जनसंख्याओं के बीच विभेदों, देश के क्षेत्रों के बीच तथा साथ ही नृजातीय समूहों के बीच विभेदों को उत्पन्न करेगी। परिणामस्वरूप आय की असमानता समाजिक तनावों के स्रोत के रूप में उभरेगी। यह विशिष्ट रूप से भारत के साथ होने वाली घटना नहीं है। मैं बताना चाहूंगा कि चीन, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका जैसी तेजी से विकास कर रहीं अनेक अर्थव्यवस्थाओं के साथ भी ऐसा हो रहा है। यह त्वरित संरचनात्मक समायोजन कर रही बड़ी अर्थव्यवस्थाओं, जैसे अमेरिका के विषय में सच है। नीचे दी गई सारणी 1 गिनी गुणांक द्वारा मापी गई बढ़ती हुई असमानता को दर्शाती हैं।

असामानता की मापः

गिनी गुणांकः

	अमेरिका	चीन	भारत	ब्राजील	द.अफ्रीका
1985-1986	41.6	22.4	32.0	59.3	
1989-1991	42.7	34.1	32.1	64.0	
1995-1996	45.0	39.0	33.8	60.2	
1999-2001	46.3	42.0	36.0	59.6	
2006	46.9	47.0	39.5	57.2	59.0+
स.रा.आ./ प्रतिव्यक्ति पीपीपी	$43,555	7,600	3,800	8,600	13,000
एचडी सारणी (177) में 200 रैंक	8	81	126	69	121

हम देख सकते है कि आय की असमानता एक अर्थव्यवस्था में त्वरित आर्थिक विकास और मूलभूत संरचनात्मक परिवर्तनों से उत्पन्न होती प्रतीत होती है। अमेरिका भी इससे अछूता नहीं हैं यदि हम असमानता की केवल एक ही माप आय पर विचार करें, तो भारत की स्थिति अधिक बुरी नही दिखती। परंतु दो अन्य मापों पर विचार करें; आय/प्रति व्यक्ति (वास्तविक स्थानीय क्रय क्षमता को दर्शाने के लिए क्रय क्षमता तुल्यता (पीपीपी) में मापी जाने वाली) और मानव विकास सूचकांक, जो अवसरों की असमानता की माप है। अतः यह यह आश्चर्य की बात नहीं है कि भारत की जनता व्याकुल है। भारत को प्रभावी मिश्र स्थिति से निपटना है।

a. निम्न प्रति व्यक्ति आय
b. उसकी मानव क्षमता – शिक्षा और स्वास्थ्य, जो बेहतर अवसरों को उत्पन्न करते है, के विकास का खराब रिकार्ड
c. एक वातावरण जो विषमतापूर्ण लाभों (आय असमानताओं) को उत्पन्न कर रहा है।
d. भारत बहुत युवा जनसंख्या रखता है। 52.3 प्रतिशत[iv] से अधिक लोग 25 वर्ष से कम आयु के हैं। 2025 तक, हम युवा जनता का देश बने रहेंगे। भारत की 41.8 प्रतिशत[1] जनसंख्या 2025 तक 25 वर्ष से कम आयु की होगी।

भारत को विचार करना होगा कि हम *इन विभिन्न मुद्दों* से कैसे निपटें। क्या भारत को *आय में वृद्धि* करके घोर निर्धनता को दूर करने के संबंध में ध्यान केंद्रित करना चाहिए और आर्थिक सोपान – *आय गतिशीलता में आगे बढ़ने* के लिए और *आशा प्रदान करने* के लिए जनता कि लिए अवसरों का सृजन करना चाहिए? अथवा, क्या सार्वजनिक नीति को आय की असमानता को कम करने पर केंद्रित करना चाहिए? मेरा मानना है कि सबसे पहला कदम *निर्धनता (आय स्तर), अवसर के अभाव (आय गतिशीलता) और आय असमानता के बीच विभेदों* के संबंध में स्पाट होना है। भारत में सार्वजनिक बहस में से विभेद नहीं किए जाते। परिणामस्वरूप, हमारे नुस्खे उन समस्याओं पर सटीक रूप से केंद्रित नहीं होते हैं, जिनका हमें समाधान करते की आवश्यकता है। मैं, अभी तक हमारे द्वारा जितनी तेजी से आय गतिशीलता का सृजन करने को प्राथमिकता देता हूं। इसके लिए शिक्षा और कौशल निर्माण के प्रति गहरी प्रतिबद्धता की आवश्यकता है। इसका अर्थ केवल विकास (10 प्रतिशत से अधिक) ही नहीं है। बल्कि तेजी से नौकरियों का सृजन करना है (आगे दिखाई देने वाले भविष्य हेतु प्रति वर्ष 10 मिलियन से अधिक)[v]। आय गतिशीलता आय असमानता से उत्पन्न होने वाले सामाजिक तनावों के लिए एक प्रभावशाली औषधि हो सकती है। इसका उत्तर अमीरों पर कर लगने और गरीबों को राज सहायता देने के माध्यम से आय असमानता को कम करने के पारंपरिक तरीकों को पुनः अपनाने में निहित नहीं है। हम प्रत्येक व्यक्ति को गरीब रखने के, ताकि हम आय समानता रख सकें, साम्यवादी और समाजवादी सिद्धांत को पुनः नहीं अपनाना चाहते। *हम उच्च आय गतिशीलता और निम्न आय असमानता के साथ त्वरीत आर्थिक विकास चाहते हैं।*

यह बहस भिन्न–भिन्न तरीकों से की जाती है। उदाहरण के लिए मुझसे अकसर पूछा जाता है कि गरीबों के लिए वैश्वीकरण अच्छा है या बुरा। मैं कहता हूं कि यह गलत प्रश्न है। हमें यह प्रश्न पूछने की

आवश्यकता है *कि वैश्वीकरण को सभी के लिए उपयोगी कैसे बनाया जाए।* हम जैसा उत्तर पाते हैं उसके लिए हम जो प्रश्न पूछते हैं उसका अत्यधिक महत्व होता है। वैश्वीकरण गुरूत्वाकर्षण की भांति है। गुरूत्वाकर्षण से *इनकार* करने का कोई मतलब नहीं है। हमें गुरूत्वाकर्षण को *चुनौती* देनी चाहिए और एक वायुयान का निर्माण करना चाहिए। *समावेशी विकास राज सहायताओं के संबंध में नहीं होता। यह सतत अवसरों का सृजन करने के संबंध में होता है।* भारत और चीन दोनों त्वरीत विकास का अनुभव कर रहे हैं और चीन दोनों विकास (भारत) और सामंजस्यपूर्ण समाज (चीन) के लिए समाधानों को पाने हेतु संघर्ष कर रहे हैं। भारत को इस क्षेत्र में पाने हेतु संघर्ष कर रहे हैं। भारत को इस क्षेत्र में अभिनव परिवर्तन करने चाहिए।

2. *आय के स्तरों से जीवन शैली में अंतरणः आकांक्षाओं की सार्वभौमिकताः*

यद्यपि प्रति व्यक्ति आय की चर्चा विकास साहित्य और विचारों में जारे–शोर से की जाती है, यह इस पर बहुत कम प्रकाश डालती है कि लोग कैसे जीते हैं और वे क्या आशाएं रखते हैं। निर्धनता का भावनीय पहलू लोगों की आकांक्षाएं गौण महत्व की हो जाती हैं। उदाहरण के लिए 2 डॉलर प्रति दिन पर जी रहे एक व्यक्ति पर विचार करें। कोई भी व्यक्ति एकदम अकेले नहीं जीता है। लोग परिवारों में रहते हैं। यदि हम पांच सदस्यों के एक परिवार पर विचार करें, तो 2 डॉलर प्रतिदिन 10 डॉलर प्रतिदिन बन जाता है और 3,650 डॉलर प्रति परिवार प्रति वर्ष बन जाता हे अर्थात् यह उस परिवार के लिए 146,000 रूपये प्रतिवर्ष होता है। हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि भारत में उपभोक्ता जनित विकास में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता, वे व्यक्ति हैं जो 2 डॉलर प्रतिदिन पर जीवन यापन करते है।। दुपहिए, सेलफोन, निजी देखभाल उत्पादों, वस्त्रों, निजी क्षेत्र के स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा में हुआ विकास इन परिवारों का बहुत ऋणी है। हमें भारत में आय गतिशीलता और असमानता की माप के लिए उपयुक्त माप पद्धति पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। यह माप पद्धति आय है अथवा जीवन शैली? उदाहरण के लिए, यदि हम मुंबई की एक मलिन बस्ती धारावी में जाकर देखें तो हम पा सकते हैं कि लोग झोंपड़ी के अंदर रंगीन टेलीविजन सेट रखे हुए हैं। उनके पास एक कुलर, एक सेलफोन, एक बिजली की इस्त्री, एक पंखा और संभवतः एक छोटा फ्रिज भी हो सकता है। उनकी जीवन शैलियां उससे बहुत भिन्न हैं जो सतही तौर पर दिखलाई पड़ती है। यह एक मलिन बस्ती है जिसमें आधुनिक जल–मल निकास व्यवस्था, पेयजल अथवा शौचालयों की कोई उपलब्धता नहीं है। जीवन–शैली संबंधी उपायों का क्या अर्थ है और हमें इस पर एकाग्रता रखने कर क्यों आवाश्यकता है? अगले 20 वर्षों में भारत की 30–35 प्रतिशत जनसंख्या मलिन बस्तियों में निवास करेगी। हम उन्हें धनी जनसंख्या वाले समूहों का नाम दे सकते हैं। भारत को द्वितीय और तृतीय स्तर के नगरों पर भी त्वरित शहरीकरण के निश्चित प्रभावों पर विचार करने की आवश्यकता

है। क्या ये विकास मूलभूत सामाजिक समस्याओं का समाधान करने हेतु नए अवसर प्रदान करते हैं अथवा उन समस्याओं को और बढ़ा देते हैं।

जब लोग नगरों में आते हैं, चाहे वे छोटे नगर हो या बड़े नगर, उनकी आकांक्षाओं में आश्चर्यजनक रूप से परिवर्तन होता है। वे अमीरों को एक मानदंड के रूप में देखते हैं। उन्हें विज्ञापनों, टेलीविजन और अन्य माध्यमों से जीवनशैली के बारे में और अधिक जानकारी होती हैं। उनकी आय में उतनी तेजी से परिवर्तन नहीं हो सकता है जितनी तेजी से उनकी आकांक्षाएं बदलती हैं। अतः बढ़ती हुई आकांक्षाओं और उन आकांक्षाओं को पूरी कर सकने वाली आय के बीच अंतर सामाजिक असंतोष में अत्यधिक वृद्धि कर सकता है। मैं जीवनशैली की असमानता पर ध्यान केंद्रित करने का सुभाव देता हूं जो सामाजिक तनावों की मुख्य स्रोत हैं। यदि हम न केवल आय की असमानता, बल्कि जीवन शैली की असमानता के रूप में समस्या की अवधारणा बनाएं तो हमें समस्या का समाधान मिल सकता है।

3. कीमत–निष्पादन आवरण में परिवर्तनः

सम्मिलित रूप से ये समस्याएं निम्न आय, उच्च आकांक्षाएं और आय की असमानताएं एक व्यक्ति को क्षणभर के लिए निराश कर सकती है। हम एक साथ इन व्यापक समस्याओं से कैसे निपट सकते हैं? मेरा मानना है कि यह संभव है। हमें सभी उत्पादों ओर सेवाओं के कीमत–निष्पादन स्तरों में मूलभूत परिवर्तन न करने के ध्यान लगाना चाहिए। निजी और सार्वजनिक संगठित क्षेत्र मुख्य रूप से अमीर और समृद्व लोगों के लिए उत्पादों और सेवाओं को विकसित करते हैं। गरीब जो उपभोक्ताओं और उत्पादों के पिरामिड के आधार–तल पर होता है, अधिकतर संगठित क्षेत्र के कार्य के दायरे से बाहर होता है। अतः हमारी ऐसी स्थिति रही है कि यदि हम उत्पादों और सेवाओं के कीमत–निष्पादन (मूल्य) आवरण का आरेख बनाएं, तो यह नीचे दिए गए (बाएं) चित्र का जैसा दिखता है।

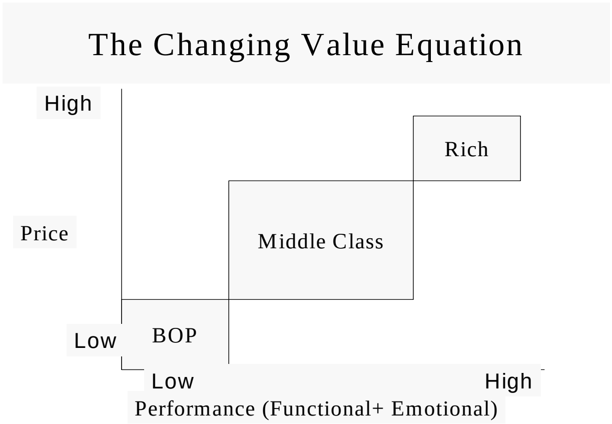

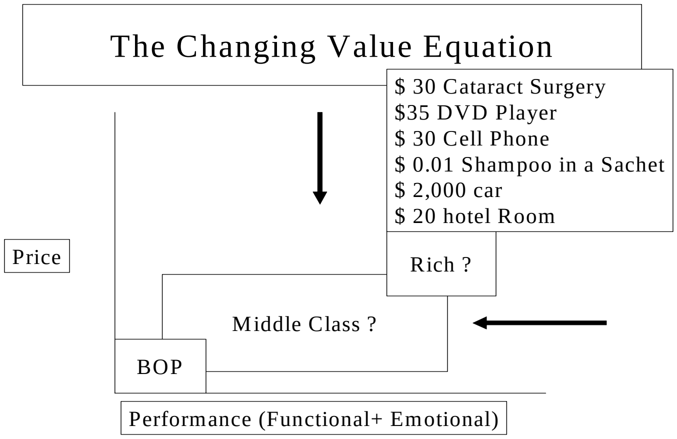

पारंपरिक रूप से, गरीब मध्यमवर्ग और अमीर अलग–अलग हिस्सों के रूप में देखे गए हैं। उत्पादों और सेवाओं को भिन्न–भिन्न निष्पादन विशेषताओं के साथ विकसित किया गया। निष्पादन के कार्यात्मक, भावनात्मक और सौंदर्यात्मक पहलूओं में विभेद होता था। कीमत–निष्पादन के स्तर पर आधारित होती थी। आपकी त्वचा में जलन उत्पन्न करने वाला डिटर्जेंट गरीबों हेतु स्वीकार्य था। बायोमास, जो एक पिछड़ा ईंधन है, के साथ खाना बनाना स्वीकार्य था। ग्रामीण गरीबों के लिए एलपीजी की कोई आवयश्कता नहीं महसूस की जाती थी। जैसे–जैसे हम गरीब से अमीर वर्गों की ओर बढ़ते थे, एक अदृश्य परंतु स्पष्ट ''कीमत–निष्पादन'' (मूल्य) सह–संबंध मौजूद होता था। गरीबों के उपभोक्ताओं के रूप में उभरने से इस दृश्य में आश्चर्यजनक रूप से परिवर्तन हुआ है। कार्यात्मक और भावनात्मक गुणवत्ता का त्याग किए बिना नए उपभोक्ता द्वारा वहन किए जा सकने वाली किमतों में मूल्य समीकरण को बदल दिया है। 30 डॉलर की मोतियाबिंद शल्य चिकित्सा, 30 डॉलर का सेलफोन, 0.01 डॉलर का शैंपू का सेशे, 2500 डॉलर की कार, 100 डॉलर का कंप्यूटर, 25 डॉलर का होटल का कमरा – यह सभी आश्चर्यजनक रूप से बदल रहे मूल्य समीकरण के उदाहरण हैं। यह प्रक्रिया त्वरित होती जाएगी। जीवन शैली समानता का सृजन करने हेतु बढ़ती हुई यह क्षमता बढ़ती हुई आय असमानता की प्रतिकारक औषधि प्रदान कर सकती है इस प्रवृत्ति विश्व भर में उच्च प्रौद्योगिकी बजारों के बदलते स्वरूप द्वारा आगे और समर्थन मिलने की संभावना है।

4. *निम्न प्रौद्योगिकी–समाधान से उच्च प्रौद्योगिकी समाधानों की आम उपलब्धता में अंतरणः*

हमें उच्च प्रौद्योगिकी संघटकों में निष्पादन सुधारों में नाटकीय परिवर्तनों पर विचार करना चाहिए जैसे कि निम्नलिखित तालिका 3 में स्पष्ट हैः

मूल्य निष्पादन आवरण उम्मीद से अधिक तेजी से बदल रहे हैं

	1970	80	90	2006
1. ट्रांजिस्टर / चिप	10^3	-	10^6	10^9
2. सूक्ष्म उपकरणों के आकार और छोटा होना	-	10^{-1}	-	10^{-6}
3. संगणना शक्ति	-	-	10^{11}	10^{15}
4. प्रति एमआईपी'स ($1000)	-	-	1	1M
5. डीएनए श्रृंखला लागत ($/बेस जोड़ा)	-	-	10	0.05

6. चुंबकीय डेटा भंडारण (बिट्स / डॉलर)	10^4	-	-	10^{11}

स्रोतः रेज कर्जवेल

जिस दर से उच्च प्रौद्योगिकी में प्रकार्यता की लागत/ यूनिट बदल रही है। उससे यही अर्थ निकलता है कि गरीब थोड़े ही समय में नवीनतम प्रौद्योगिकी वाले उत्पाद और सेवाएं खरीद सकते हैं, चाहें वह सेलफोन हो या आईपोड। इसके अतिरिक्त समृद्धि के नए स्रोत जैसे सूचना तक पहुंच निःशुल्क होती जा रही है जैसे कि गूगल कर रहा है। इसलिए, भारत जैसे उभरते हुए बाजारों में मूल्य निष्पादन पर दबाव एक वैश्विक विशेषता – कीमतों में नाटकीय गिरावट और लागत ढांचों का मूलभूत पुनःसंरेखण सृजित कर सकता है। यह प्रक्रिया पहले से ही चल रही है जैसे कि विभिन्न उद्योगों के उदाहरणों से स्पष्ट होता है। इन दरों पर कोई कारण ऐसा दिखाई नहीं देता कि भारत सभी के लिए *नवीनतम प्रौद्योगिकी समाधान* क्यों नहीं प्रदान कर सकता है। यह अच्छी खबर है। अधिक लोग चीजों को खरीद सकते हैं। अधिक लोग अपनी जीवनशैली की आंकाक्षाओं को पूरा कर सकते हैं। इस वहनीयता में वृद्धि के परिणामस्वरूप खतप में भारी वृद्धि हो रही है। इस व्यापक बाजार अवसर से पर्यावरण और इससे अपेक्षाओं पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा।

5. *पारिस्थितिकी सजीवता के लिए उत्पाद और कार्यों का प्रावधान करनाः*

यदि 800 मिलियन भारतीय सूक्ष्म उपभोक्ता और सूक्ष्म उत्पादक बन जाएं तो तब क्या होगा? पर्यावरणीय प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकते हैं। चाहे वह जल हो, ऊर्जा हो, अपशिष्ट और पैकेजिंग हो या फिर भूमि का प्रयोग हो, पूरी पारिस्थितिकी पर दबाव पड़ेगा। धारणीयता बहुआयामी होती है। यह केवल ऊर्जा या जल नहीं है। यह केवल अपशिष्ट नहीं है। दुर्भाग्यवश, पारिस्थितिकी पहले गरीब को नुकसान पहुंचाती है, चाहे यह पानी के व्यापार की लागत हो या पकाने में बायोमास के कारण होने वाली सांस की बीमारियां हों या फिर असुरक्षित पेय जल के कारण पेट की गड़बड़ियां हों।

हमारे लिए यह समझना जरूरी है कि तीव्र विकास खपत और उत्पादन – का प्रभाव न केवल भारत पर अपितु पूरी दुनिया की पारिस्थितिकी पर पड़ता है।[vi] पारिस्थितिकीय क्षति सीमाओं को नहीं पहचानती है। हम दो परत – भोजन और पानी की व्यवस्था के रूप में पारिस्थितिकी की भूमिका पर विचार करते हैं। इस प्रावधान करना कह सकते हैं। दूसरी बात हम इन प्राकृतिक पूंजी या प्राकृतिक संसाधनों को कैसे

विनियमित और संरक्षित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए हम मुंबई में मल निकासी की व्यवस्था में सुधार कर सकते थे और सुनिश्चित कर सकते थे कि यह मानसून के दौरान भारी वर्षा को सह सके। हम मलेरिया जैसी बीमारियों को फैलने से रोकने के लिए बेहतर ढंग से नियंत्रित कर सकते हैं। हम वनह्रास को नियंत्रित कर सकते हैं। अंत में हम प्रकृति के फलों – मनोहर झीलों, बर्फ से ढकी पहाड़ की चोटियों और समुद्र का लुत्फ उठा सकते हैं। प्रकृति जीवन की गुणवत्ता बढ़ा सकती है। पूरे विश्व में, मानव की बुद्धिकौशल ने प्रकृति के उपहार में सुधार करने के तरीके खोज निकाले हैं। हम प्रति एकड़ भूमि अधिक अन्न पैदा करते हैं। हम कह सकते हैं कि प्रावधन करने से कुछ वृद्धि हुई है। तथापि, प्राकृतिक पूंजी के विनियम से मिश्रित फल मिलता है। बाढ़, सूखा, वनह्रास, भूमि और जल की गुणवत्ता में गिरावट सर्वविदित है। भारत को स्थिति की गंभीरता को समझने की जरूरत है। मैं आपको वे मानचित्र और उपग्रह से प्राप्त चित्रों को दिखा सकता हूं जिससे यह मालूम होता है कि भारत में खराब विनियम और प्रवर्तन के कारण प्राकृतिक संपदा की क्या दशा हो रही है। जिन अनेक क्षेत्रों में तत्काल ध्यान दिए जाने की जरूरत है उनमें से मैं 4 क्षेत्र नीचे ले रहा हूं:

1) जल की गुणवत्ता, इसकी उपलब्धता और सुलभता, जल प्रयोग कृषि, उद्योग और घर प्रयोग के लिए मिश्रित रूप से हो रहा है।
2) ऊर्जा
3) वनह्रास और
4) स्वास्थ्य। स्वास्थ्य का जल और ऊर्जा से निकट का संबंध है।

गरीबी उन्मूलन सत्त विकास के बारे में सोचे बिना संभव नहीं है और दोनों अभिन्न रूप से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। ऊर्जा, जल, पैकेजिंग, प्रति व्यक्ति अपशिष्ट के लिए विकास के वर्तमान स्वरूप अनुचित है और हमें मौलिक रूप से नए विचारों को विकसित करना है। भारत एक पारिस्थितिकीय ''टाइम बम'' का प्रतिनिधित्व करता है। शहरी भारत में जल की कमी पहले से ही प्रमुख समस्या है और इसके बदतर होने की संभावना है। ऊर्जा की लागत पहले से ही बहुत ऊंची है। संसाधन प्रयोग की ये पद्धतियां टिकाऊ नहीं है। हमें संसाधनों के बेहतर प्रयोग को तलाशना चाहिए और इस क्षेत्र में नए आविष्कारों को समर्थित करना चाहिए। हमें खाना पकाने के लिए बेहतर प्रणाली ढूंढनी चाहिए; औद्योगिक, कृषि और घरेलू प्रयोग के लिए जल की लागत और आवंटन को बेहतर रूप से व्यवस्थित करना चाहिए या अपशिष्ट कमी के लिए बेहतर प्रणालियां तलाशनी चाहिए; जिसमें जैविक अपक्षीणन शामिल हों। मैं आशा करता हूं कि वहनीय मूल्य निष्पादन स्तर, जो कि एक उचित और समावेशी समाज के सृजन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, पारिस्थितिकीय मूल्य टैग से आएगा। पारिस्थितिकी समझदारी के साथ इस प्रकार के अबाध समावेशी विकास सृजित करने की पूर्वशर्तें क्या हैं?

6. *सुशासन पर ध्यानः*

हमें खरीद शक्ति की दृष्टि से प्रति व्यक्ति जीएनआई, मानव विकास सूचकांक में देश की प्रगति और शासन की गुणवत्ता – अर्थात भ्रष्टाचार के स्तर के बीच संबंध पर विचार करना चाहिए। यह सूचना सभी देशों के लिए सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है। उदाहरण के लिए;

a. पीपीपी की दृष्टि से जीएनआई/प्रति व्यक्ति विश्व बैंक से उपलब्ध है
b. यूएनडीपी से मानव संसाधन सूचकांक उपलब्ध है
c. ट्रांसपेरेंसी इंटरनेश्नल से भ्रष्टाचार सूचकांक उपलब्ध

यदि हम इस आंकड़े का प्रयोग करते हैं और दोनों धनी एवं निर्धन देशों को देखते हैं तो हमें बहुत ही दिलचस्प संबंध प्राप्त होता है।

a. मानव विकास सूचकांक एवं भ्रष्टाचार अवधारणा सूचकांक के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भ्रष्ट देशों में मानव विकास का स्तर नीचे है।
b. यदि आप भ्रष्टाचार अवधारण सूचकांक और पीपीपी दृष्टि से जीडीपी/प्रति व्यक्ति देखते हैं तो भ्रष्ट देश धनी नहीं हैं। भ्रष्ट देशों में छोटा जनसंख्या समूह धनी हो सकता है लेकिन पूरे देश के रूप में धनी नहीं होता है।
c. यदि आप मानव विकास सूचकांक और जीडीपी/प्रति व्यक्ति देखते हैं तो इसमें भी वही प्रवृत्ति है। जितना अधिक आप मानव संसाधन पर खर्च करते हैं उतना ही अधिक देश धनी बनता है।

ये सह–संबंध नीचे दर्शाए गए हैं। हम इन महत्वपूर्ण सह–संबंधों से कुछ महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाल सकते हैं। भारत में, यह सुरक्षित रूप से कहा जा सकता है कि मानव संसाधन की खराब गुणवत्ता संसाधनों का अभाव नहीं है। संसाधनों के उपयोग से बरते गए भ्रष्टाचार के कारण है। अच्छा शासन अथवा कम भ्रष्टाचार प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के स्तर को उठाने का एकमात्र उपाय है, कोई और उपाय नहीं है। राष्ट्र पहले धनी और बाद में कम भ्रष्ट नहीं बनता है। *कोई भी राष्ट्र धनी बनने से पूर्व कम भ्रष्ट बनता है।* इन सभी निष्कर्षों से आश्चर्य नहीं होना चाहिए। यह सहज रूप से स्पष्ट है परंतु हम पूरे विश्व से आंकड़े देख सकते हैं तथा हमारे निष्कर्ष और पुष्ट हो जाते हैं। मैंने 2006 में, भारत की प्रति व्यक्ति जीडीपी और मानव विकास सूचकांक में इसका स्थान देखा (जो 177 में से 126 है)। इमसें कोई खुशी की बात नहीं हो सकती है। हमारा भ्रष्टाचार अवधारणा सूचकांक 3.3 था (दस में से बहुत नीचे, कुछ ही देश हम से नीचे हैं)। हम इस दृष्टि से 2020 तक भ्रष्टाचार के स्तर और मानव विकास सूचकांक की दृष्टि से महत्वपूर्ण सुधार कर सकते हैं। हो सकता है कि भारत तब तक फिनलैंड के स्तर पर न पहुंच पाए परंतु

यदि हम 7 पर भी पहुंच जाते हैं (अमेरिका के निकट) और मानव विकास सूचकांक में 175 में से 20 के

Human Development Index (HDI) vs. Corruption Perception Index (CPI)

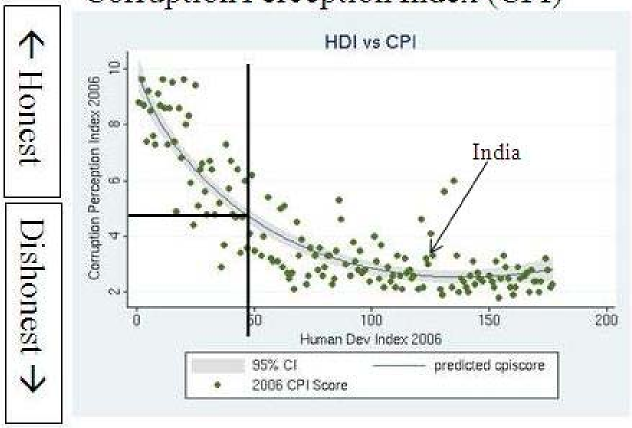

Corruption Perception Index (CPI) vs. Purchasing Power Parity (PPP)

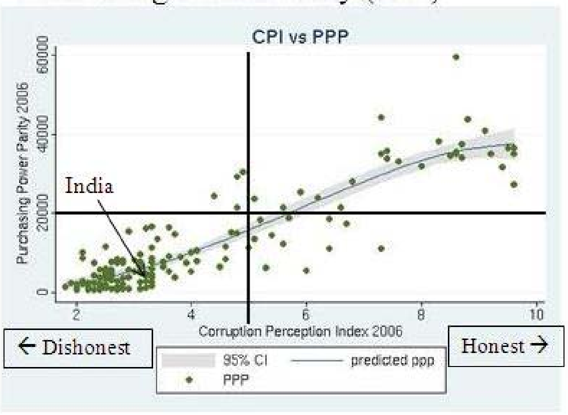

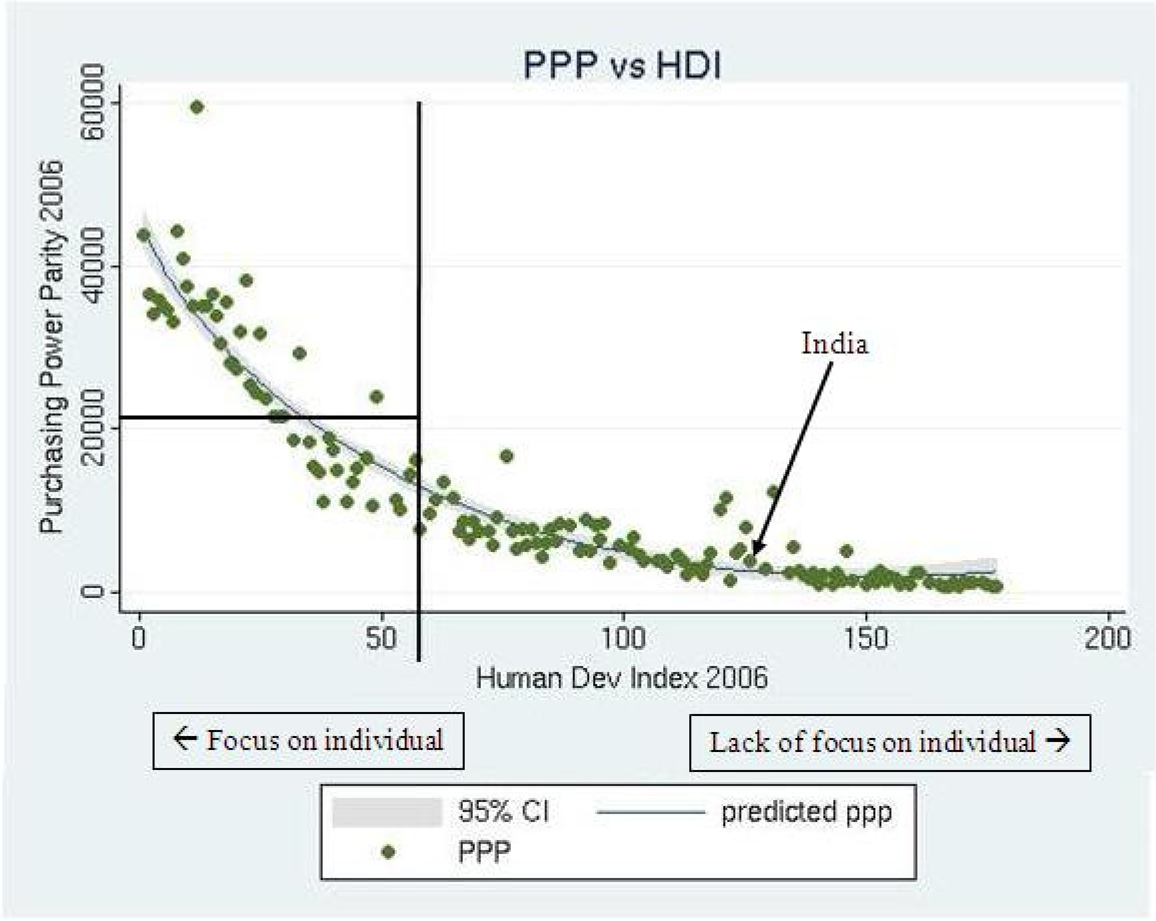

रैंक पर पहुंच जाते हैं तो हमारी प्रति व्यक्ति आय में नाटकीय रूप से वृद्धि होगी – अर्थात 3,800 डॉलर पीपीपी के वर्तमान स्तर से बढ़कर 25,000 डॉलर पीपीपी हो जाएगी। यह जीडीपी अंतर कुल 28.2 डॉलर ट्रिलियन निरूपित करता है। स्पष्ट मात्रात्मक मूल्य जो हम देश में भ्रष्टाचार के लिए और मानव संसाधन की अपेक्षा करके दे रहे हैं, वह चौंकाने वाला है और राष्ट्रीय बहस का केंद्र होना चाहिए।

हमें भ्रष्टाचार से निबटने और मानव विकास सूचकांक बढ़ाने के लिए अधिक कानूनों की जरूरत नहीं है। मेरा विश्वास है कि हमें कुछ मूलभूत क्षेत्रों में ध्यान देने की जयरत है।

a. *मानसिक मॉडलः* जो मानसिक मॉडल हम भारत के बारे में, इसके भविष्य, इसकी विकास आवश्यकताओं और व्यक्तियों के अधिकारों के बारे में सोचने के लिए प्रयोग करते हैं, हमें उसकी गंभीरता से जांच करनी चाहिए। भारतीय बनने का क्या मतलब है? नागरिकता किसी भारतीय व्यक्तिगत नागरिक को क्या अधिकार देती है?

b. *व्यक्तियों के अधिकार बनाम समूहों के अधिकारः* भारतीय बनने के अधिकारों के साथ व्यक्ति के अधिकारों पर केंद्रित करने के बीच करीबी संबंध है। भारतीय राजनीति समूहों के अधिकारों पर आधारित है। हमें ''अधिकारों'' के मूलभूत दायरे की पुनः संवीक्षा करने की जरूरत है। क्या मुख्य ध्यान व्यक्ति के अधिकारों में बदल जाना चाहिए?

c. *आंकड़े संचालित समाधान बनाम सिद्धांत संचालित समाधानः* प्रत्येक महत्वपूर्ण मुद्दे पर अनेक आंकड़े उपलब्ध हैं। तथापि, बहस अक्सर विचारों पर होती है। आंकड़ों को तोड़ा मरोड़ा जाता है या इससे भी बढ़कर उनका प्रयोग ही नहीं किया जाता है। इतिहास आंकड़े संचालित वास्तविकता के ऊपर विचारधारा थोपने के मानवीय परिणाम के उदाहरणों से भरा हुआ है। इनमें वे लाखों लोग शामिल है जो स्टालिन के गुलगों में मर गए या मावों के अकाल के शिकार हो गए। लोकतंत्र अनिवार्य रूप से किसी राष्ट्र को खराब सूचित विकल्पों के अनचाहे नकारात्मक परिणामों से नहीं उबारता है।

d. *सिद्धांत बनाम औपचारिक कृत्यः* जब हमारा सामना मुश्किल निर्णयों से होता है तो हमें ''टाइ ब्रेकर'' के रूप में मूल सिद्धांतों पर जाने की जरूरत है।

e. *सामाजिक न्याय समाजवाद नहीं हैः* हमें सामाजिक न्याय, सबके लिए समान अवसर सृजित करते हुए तथा समाजवाद के साथ असमानताएं दूर करने के साथ भ्रम नहीं करना चाहिए। समाजवाद एक विचारधारा है और यह धन अर्जित करने के साथ सामाजिक समानता सृजित करने में कहीं भी सफल नहीं हुई है।

f. *निष्पादन के लिए जवाबदेहीः* हमें जवाबदेही के लिए बेहतर प्रणाली की जरूरत है। संक्रमण और डायरिया बीमारी के कारण प्रति वर्ष लगभग 2 मिलियन शिशु मर जाते हैं। इन ''अनावश्यक और निवाराणात्मक मृत्युओं'' के लिए कौन जवाबदेह है?

g. *भ्रष्टाचार राजद्रोह के रूप में:* जब तक सभी स्तरों पर भ्रष्टाचार को राजद्रोह की गंभीरता से नहीं निपटा जाता है, यह बदलाव की बहुत धीमी प्रक्रिया होगी।

h. *कल्पना पर केंद्रित करना बनाम संसाधनों पर केंद्रित करना।* हम अपने अधिक प्रभाव वाले अवसरों के लिए अपने संसाधनों को कैसे नियोजित करते हैं, यह संसाधन आधार के आकार से और भी महत्वपूर्ण है।

हम मेरा मानना है कि इन सिद्धांतों के लिए भारत में शासन की संस्कृति में ठोस परिवर्तन करने तथा महत्वपूर्ण आत्म निरीक्षण करने की जरूरत है। लेकिन मेरा विश्वास है कि यह भारत में रूप परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण है।

कम लागत में नवीन आविष्कार

मैंने इंडिया@75 के संदर्भ में विकास प्रमुख युक्तियों की पहचान की है। वे अत्यंत गरीबी से संबंधित नहीं है अपितु आय असमानता, जीवन शैली की पहचान करने, शहरीकरण एवं सार्वभौमिक आकांक्षाओं का उद्भव, मूल्य निष्पादन संबंधों में नाटकीय बदलाव, आर्थिक विकास और पारिस्थितिकीय संकट एवं अंत में, शासन की भूमिका और कानून के नियम से भी संबंधित हैं। मेरी चर्चा में जो अप्रत्यक्ष है लेकिन समझने में महत्वपूर्ण प्रक्रिया पैमाने की अवधारणा है – 1.2 बिलियन की जनसंख्या वाले देश के लिए कार्यों के पैमाने की जरूरत है जिसकी अभी तक हमने कल्पना भी नहीं की है। इसी तरह, मैंने बाजार आधारित समाधानों पर स्पष्ट रूप से केंद्रित किया है। दोनों पैमाना और बाजार आधारित दृष्टिकोण मेरे विश्लेषण में निहित हैं।

छः मुद्दों, जिनकी मैंने इंडिया@75 के संदर्भ में पहचान की है, उपेक्षा नहीं की जा सकती है। सभी विकासों को इन बाधाओं का सामना करना चाहिए तथा उन्हें ''अपराक्रम्य'' रूप में समझना चाहिए। हमें इन सीमाओं के भीतर आविष्कार करना होगा। इन सीमाओं के महत्व को प्रदर्शित करने के लिए मैंने *कम लागत में आविष्कार या विकासात्मक आविष्कार की धारणा विकसित* की। सामाजिक समानता फोकस आय समानता की आवश्यकता की पहचान करता है, कानून की नियम सीमा पहले उठाए गए प्रमुख शासन संबंधी मुद्दों से संबंधित है, पर्यावरणीय धारणीय सीमा पारिस्थितिकी सजीवता की जरूरत से संबंधित है और नई मूल्य निष्पादन सीमाओं में स्पष्ट रूप से बदलते हुए मूल्य निष्पादन आवरण शामिल हैं जिन पर हमने पहले चर्चा की है। हम जानते हैं कि हम इन सीमाओं के भीतर कार्य कर सकते हैं और आविष्कार कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम मूल्य निष्पादन आवरण को सफलतापूर्वक हल कर रहे हैं। हम तेजी

से विकास कर रहे हैं। बाजार आधारित मूल्य गति पकड़ रहा है। हम पारिस्थितिकी जरूरतों को कुछ–कुछ समझ रहे हैं चाहे वह परिवहन में सीएनजी का प्रयोग हो या फिर वर्षा जल संचय हो। हमने कानून का लागू करने में, शासन सुधारने में या बाजार आधारित तंत्र के माध्यम से सामाजिक समानता के संबंध में बहुत कम प्रगति की है। नया ढांचा इन सभी जरूरतों को एकसाथ रखने के बावजूद प्रगति नहीं कर पाया है तथा इंगित करता है कि सभी आविष्कार, नीतिगत निर्णय और प्राथमिकताएं इस नवीन ढांचे के भीतर की जानी चाहिए। मैं कहता हूं कि इन सीमाओं का उल्लंघन मत करो। इन सीमाओं के अंतर्गत काम करो। जहां तक हम इन सीमाओं के भीतर विकास करते हैं हम बहुत अच्छा कार्य करेंगे।

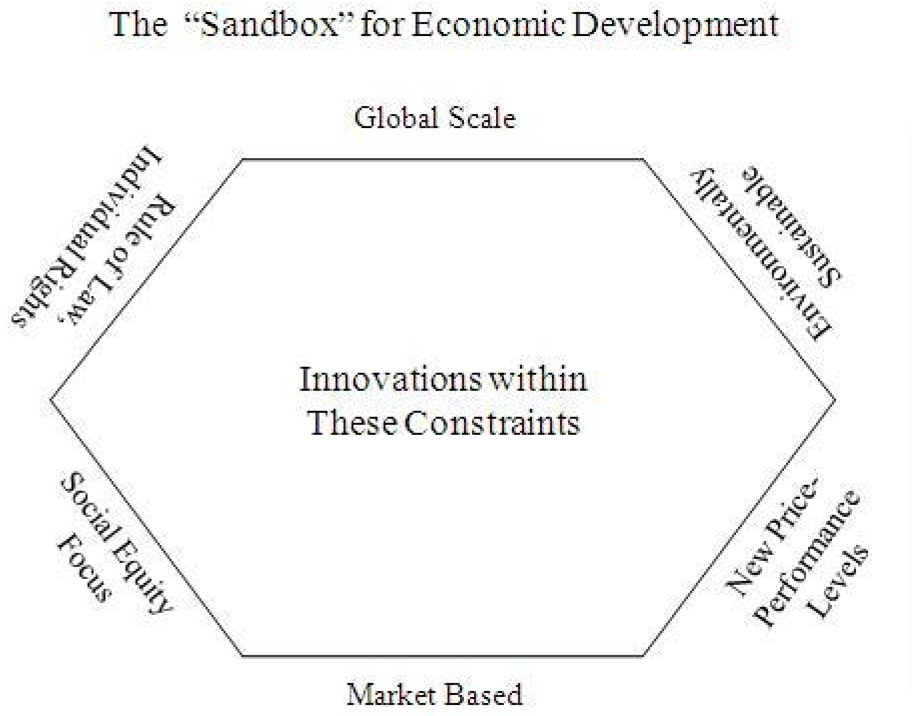

राजनीतिज्ञों, नौकरशाहों, व्यापारियों, गैर–सरकारी संगठनों और गैर–सरकारी नागरिकों के लिए वैसे ही ढांचा होना चाहिए। नवीन कार्यो के प्रति दृष्टिकोण अलग–अलग हो सकते हैं लेकिन सीमा स्थितियां एक ही जैसी होनी चाहिए।

इंडिया@75 क्षमता जो मैंने इस व्याख्यान के आरंभ में पेश किया है जब ही संभव है यदि हम सीमाओं को स्वीकार करने और उसी ढांचे के भीतर निष्पादित करने में अनुशासित हैं। मैं हमेशा भारत के भविष्य में आशावादी रहा हूं। मैंने सोचा कि मैं सीआईआई सम्मेलन में 1989 में दिए गए प्रस्तुतीकरण को दोहराकर समाप्त करूंगा। भारत के बारे में मेरा दृष्टिकोण, जैसे कि मैंने 1989 में इसका भविष्य देखा, वह निम्न हैः

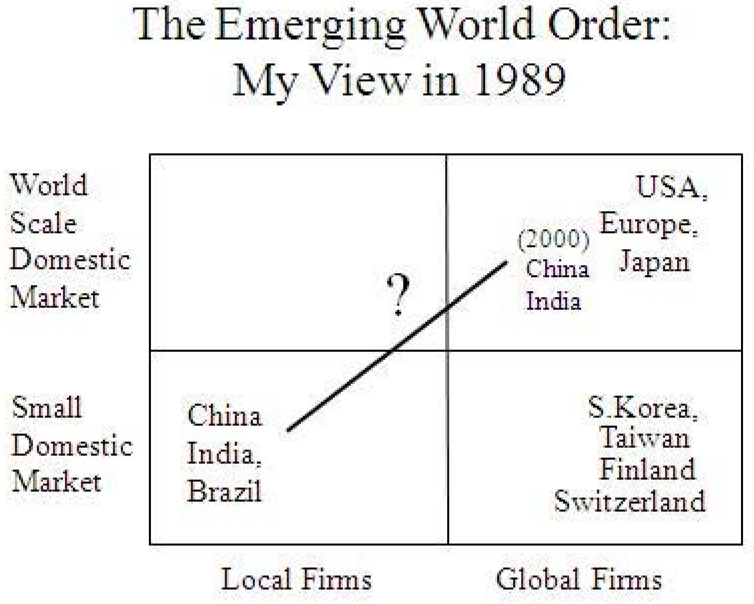

यदि हम उस समय विश्व के औद्योगिक परिदृश्य को देखते हैं तो उस समय वैश्विक फर्में और स्थानीय फर्में थी। कुछ देश बड़े (विश्व स्तर के) घरेलू बाजार का प्रतिनिधित्व करते थे। और कुछ छोटे घरेलू बाजार के साथ फिनलैंड, नीदरलैंड और स्विटजरलैंड तथा अमेरिका, जापान और जर्मनी जैसे देशों ऐसे हैं जो यह दावा कर सकते हैं कि वे वैश्विक फर्मों के घर हैं तथा वे विश्व स्तर के घरेलू बाजारों का प्रतिधित्वि करते है। भारत मे उस समय कोई वैश्विक फर्म नहीं थीं और यहां बहुत छोटा घरेलू बाजार था। मेरा पूर्वानुमान उस समय यह था कि 2000 तक भारत और चीन चुनिंदा देशों के समूह जैसे अमेरिका, जर्मनी और जापान में शामिल हो जाएगा। हम उस स्तर तक नहीं पहुंच पाए हैं लेकिन हम प्रगति पर है। जी–7 और जी–8 भारत को भविष्य के लिए औपचारिक रूप से शामिल कर सकता है। उस समय इस चीज में बहुत कम लोग विश्वास करते थे। अब यह वास्तविकता बन रही है। हममें से प्रत्येक अब यह विश्वास करता हैं कि भारत ने विश्व आर्थिक क्षेत्र मे अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है।

मेरे विचार से भारत में गरीब विकास यात्रा के लिए तैयार हैं। मेरे विचार से समस्या भारत के उच्च्व वर्ग और भारत के राजनैतिक नेताओं की वजह से है। मेरा विश्वास है कि यदि आप भारत को समझना चाहते

हैं तो हमें उसके अतीत वापस जाना होगा। हाल का इतिहास उसकी प्रतिभा के बारे में पर्याप्त बयान नहीं करता है। भारत में और हो सकता है कि विश्व में पहली नीतिज्ञ तमिल संत तिरूवल्लूवर था। उन्होंने कुछ ऐसी नाटकीय बात कही – ''यदि भगवान भी तुम्हारें विरूद्ध हो, तो कठिन परिश्रम आपको सफलता दिलाएगा''। 2000 वर्ष पहले उन्होंने हमसे कहाः ''स्वयं के अलावा किसी अन्य को दोष मत दो।'' मेरे विश्वास से भारतीयों से अधिक कोई भी अकिध शक्तिशाली नहीं है जो अपने भविष्य की जवाबदारी लेता हो। यदि इंडिया@75 में विश्व नेता बनने में विफल होता है तो विफलता का एकमात्र कारण भारतीय स्वयं होंगे। बाहरी कोई भी शक्ति आपको सफलता से नहीं रोक सकता है। इसलिए रूप परिवर्तन संसाधनों में परिवर्तन लाना नहीं है। यह नए भारत के निर्माण अपने आत्मविश्वास में परिवर्तन लाना है। यदि हम ऐसे भारत की कल्पना नहीं कर सकते हैं हम उसे सृजित नहीं कर सकते हैं। कल्पना और विश्वास भारत का सही भाग्य है, यही हममें चाहिए। हममें जीजीविषा होनी चाहिए, साहसा होना चाहिए और निश्चय ही विनम्रता के साथ मानवता होनी चाहिए।

आपका धन्यवाद

ज्ञान आयोग श्री सैम पित्रोडा के नेतृत्व में और *कौशल आयोग* श्री .... के नेतृत्व में इस दिशा में अच्छा कदम हैं
[i] सी.के. प्रहलादः द फॉरच्यून एट द बॉटम ऑफ द पिरामिडः इरेडिकेटिंग पोवर्टी थ्रू प्रोफिट्स, व्हार्टन पब्लिशिंग, 2004 और सी.के. प्रहलादः द इनोवेशन सैंड बॉक्स; नीति+व्यापार, 2007
ज्ञान आयोग श्री सैम पित्रोडा के नेतृत्व में और *कौशल आयोग* श्री .... के नेतृत्व में इस दिशा में अच्छा कदम हैं
[ii] सी.के. प्रहलादः द फॉरच्यून एट द बॉटम ऑफ द पिरामिडः इरेडिकेटिंग पोवर्टी थ्रू प्रोफिट्स, व्हार्टन पब्लिशिंग, 2004 और सी.के. प्रहलादः द इनोवेशन सैंड बॉक्स (कम लागत में नवीन आविष्कार); नीति+व्यापार, 2007
[iii] विश्व संसाधन संस्थान
[iv] स्रोतः यूएन जनसंख्या विभागः विश्व जनसंख्या परिदृश्य 2006
[v] मैंने 2002 से शुरू होकर अनेक वर्षों के लिए 10प्रतिशत विकास और 10 मिलियन नई नौकरियों के संबंध में कहा था।
[vi] विश्व संसाधन संस्थान